₹10/-

हँसती दुनिया

वर्ष 42 अंक 5
मई 2015

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG

GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 42
अंक 5
पृष्ठ 68

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

मई
2015

स्तम्भ

सबसे पहले 4
अनमोल वचन 5
वर्ग पहेली 10
जन्मदिन मुबारक 11
समाचार 16
भैया से पूछो 30
कभी न भूलो 41
पढ़ो और हँसो 46
रंग भरो परिणाम 48
आपके पत्र मिले 65

चित्रकथा

दादा जी 12
किट्टी 54
फोटो फीचर 58

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

नरक और स्वर्ग का द्वार — उमाशंकर यादव 7
उसे चिड़िया ने महान गणितज्ञ बनाया — दिनेश दर्पण 9
नम्रता का पाठ — नितिन ग्रोवर 20
अपना अपना भाग्य — किशोर डैनियल 22
जम्बू बन गया सयाना — राजकुमार जैन 'राजन' 27
जब हार जीत में बदली — मदन देवड़ा 33
सबका अपहरण कर लो — डॉ. सेवा नन्दवाल 37
ज्ञान की उत्पत्ति — फेनम सौगानी 42
हमें माफ कर दो — जितेन्द्र मिश्र 51
हृदय परिवर्तन — ममता विरदी 60

कविताएं

गर्मी की ऋतु आई — कमल सिंह चौहान 6
आई धूप — गोविन्द भारद्वाज 6
फूल — दीपक कुमार 18
रेल — बद्री प्रसाद वर्मा 26
चलती जाती है — राजेन्द्र निशेश 26
बच्चे और नैतिक शिक्षा — डॉ. परशुराम शुक्ल 34
सूरज सुबह निकलता है — हरजीत निषाद 59
कचनार, गुलदाउदी — अंकुश्री 63

विशेष/लेख

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी — विकास अरोड़ा 19
अंधेरे में चमकती जानवरों की आंखें — किरण बाला 21
पहेलियां — राधा नाचीज़ 25
स्मार्ट घड़ी — किरण बाला 32
अनमोल रत्न : मैरी कॉम — मुकेश कुमार बत्तरा 43

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	20 YEARS
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रभारी पत्रिका विभाग : सी. एल. गुलाटी

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

स्वयं से प्रतिस्पर्धा

आज हर व्यक्ति दूसरे से आगे निकल जाना चाहता है। पद में, प्रतिष्ठा में, समाज में, व्यापार में, नौकरी में, व्यवसाय में, खेल में, पढ़ाई में इत्यादि–इत्यादि। आगे निकल कर उसे कहाँ जाना है, इसका आभास उसे होता ही नहीं है। इस दौड़ में वह इतना व्यस्त हो जाता है कि उसे मालूम ही नहीं रहता कि यह सब मैं क्यों कर रहा हूँ? यह बात ठीक भी है क्योंकि उसे इस बारे में सोचने का समय ही नहीं मिल पाता है। वह हमेशा अपने को दूसरे से आगे देखना चाहता है।

प्यारे साथियों, यह वास्तव में सोचने का विषय है कि हम दूसरे से आगे क्यों निकलना चाहते हैं? कहीं हम प्रतिस्पर्धा में शामिल तो नहीं हो रहे हैं! कहीं हम हर समय दूसरे से अपने आप की तुलना तो नहीं कर रहे हैं या हम अपने आप को बेहतर व शक्तिशाली व्यक्तित्व में परिवर्तित करना चाहते हैं! स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सम्यक तुलना तो जीवन को कुछ आगे ले जा सकती है परन्तु इसकी अन्धी दौड़ हमारे अपने ही अहित का कारण भी बन सकती है।

हमें अपने आप को बेहतर, स्व–सक्षम बनाने का प्रयास तो अवश्य करना है परन्तु यह प्रयास हमें अपनी इच्छाशक्ति और आत्म–बल को मजबूत करके अनुशासन एवं मर्यादा में रहकर करना होगा। हमें जागरूक रहते हुए हर कार्य को करना है क्योंकि जाग्रत अवस्था में किया गया कार्य हमेशा कल्याणकारी होता है।

साथियों! हमें दूसरों से अच्छा बनना या आगे निकलने की आवश्यकता ही नहीं होगी जब हम हमेशा अपने आपसे दिन–प्रतिदिन बेहतर होने का प्रयत्न करेंगे। हमें अपने कल से आज तो अच्छा होना ही है और कल हमें फिर यही संकल्प लेना है कि हमें, आज जो कल बीत गया है, उससे भी अच्छा बनना है। हमें दूसरों से नहीं, अपने बीते कल से श्रेष्ठ होना है और यही स्वयं से प्रतिस्पर्धा का महत्व है।

–विमलेश आहूजा

अनमोल वचन

– संकलन : योगेश कुमार (इंदौर)

- परमात्मा को रिझाना तभी सम्भव है, जब हम इन्सानों को भी अपनाएं।
- जिसमें दास भावना है, धर्म के क्षेत्र में वही ऊँचा माना जा सकता है।
- अभिमान जूते में कंकर की तरह होता है जो दुःख ही देता है।
- हम, महापुरुषों का नाम लेते हैं। उनकी पूजा करते हैं। हम उनको मानने तक सीमित न रह कर उनकी (बात) भी मानें।
- अगर किसी को मरता–कुचलता देखकर अपने मन में खुशी महसूस करते रहेंगे तो हम धार्मिक नहीं है।

– सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी

- अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु श्रेष्ठ होती है। – सी.वी. रमण
- क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात कहने के बजाय दूसरों के हृदय को ज्यादा दुखाता है। – मुंशी प्रेमचन्द
- इच्छाएं ही सब दुःखों का मूल कारण हैं। – गौतम बुद्ध
- ऐसा देश छोड़ देना चाहिए जहाँ धन तो है लेकिन सम्मान नहीं है।

– विनोबा भावे

- यदि मार्ग कांटो भरा हो और आप नंगे पाँव हों तो रास्ता बदल लेना चाहिए। – चाणक्य
- कामनाएं समुद्र की भाँति है। पूर्ति का प्रयास करने पर उनका कोलाहल और बढ़ जाता है। – स्वामी विवेकानन्द
- जैसे सूर्य आकाश से छुप नहीं सकता, उसी प्रकार महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते। – व्यास

बाल कविता : कमल सिंह चौहान

गर्मी की ऋतु आई

गर्मी ऋतु अब देखो बहकी,
आम के पेड़ पर केरी चहकी।
महुए ने अपना मुँह खोला,
गरम हवा की पायल छनकी।

कंठ सूखता प्यास लपकती,
बोझ आम के शाखा लटकती।
तोता मैना पुस्तक बांचे,
चीं चीं करती चिड़िया ठुमकी।

हाथ पैर मुँह बाँध के निकले,
जमे हुए सब देखो पिघले।
तरबजू खरबूज धूम मचाये,
जगह–जगह अब कोयल कुहकी।

कविता : गोविन्द भारद्वाज

आई धूप

लेकर बस्ता आई धूप,
आंगन रस्ता छाई धूप।

चमक रही है डाली–डाली,
किरणों की सज गई प्याली।
डाल पे गाये कोयल काली,
खिल गई कलियां मतवाली।

खेतों को लुभाती धूप,
लेकर बस्ता आई धूप।

उपवन की भी मिट्टी महकी,
नन्हीं चिड़िया छत पर चहकी।
भंवरे के संग क्यारी–क्यारी,
तितली घूमे बहकी–बहकी।

ओस के संग मुस्काई धूप,
बस्ता लेकर आई धूप।

प्रेरक–प्रसंग : उमाशंकर यादव

नरक और स्वर्ग का द्वार

हेकु नामक साधक जंगल में अपनी साधना में लीन थे। एक बार नोबू नामक एक सैनिक उनके पास आया। उसने कहा– देव! एक जिज्ञासा है, जिसने मन को अशान्त कर रखा है। कृपया मेरी जिज्ञासा का समाधान कर मन को शान्ति प्रदान करें।

–कहो मित्र, क्या पूछना चाहते हो?– हेकु ने कहा।

नोबू ने पूछा– देव! क्या स्वर्ग और नरक की बात यथार्थ है?

–तुम हो कौन?– हेकु ने पूछा।

–मैं एक योद्धा हूँ– नोबू ने कहा।

–अरे! तुम एक योद्धा हो? किस राजा ने तुम्हें योद्धा बनाया? तुम तो एक भिखारी जैसे लगते हो।– हेकु ने कहा।

यह सुनकर योद्धा आग–बबूला हो गया। आंखें लाल हो गईं; भुजाएं फड़कने लगीं। उसने म्यान से तलवार निकाल ली और चीखा– खामोश! आगे एक शब्द भी बोला तो तेरा सिर धरती पर लुढ़कता नज़र आएगा।

इन बातों का हेकू पर कोई असर नहीं हुआ। उसने सैनिक का उपहास करते हुए फिर कहा– अच्छा, तो तुम तलवार भी रखते हो? किन्तु लगता है इसकी धार निकम्मी हो गई है। यह मेरा गला नहीं काट सकेगी; इसे म्यान में रख लो।

इतना सुनते ही नोबू ने प्रहार करने के लिए तलवार ऊपर उठाई।

– ठहरो!– हेकु ने कहा– मित्र! यही नरक का द्वार है।

नोबू चकित हो गया। उसने तलवार म्यान में डाल ली और हाथ जोड़कर हेकू को प्रणाम किया।

हेकू ने कहा– मित्र यही स्वर्ग का द्वार है।

प्रेरक–प्रसंग : दिनेश दर्पण

उसे चिड़िया ने महान गणितज्ञ बनाया

कई वर्ष पहले की बात है। संयुक्त राज्य अमेरिका में डिफोस्ट नाम का एक लड़का रहता था, पढ़ने–लिखने में उसकी बहुत अधिक रूचि थी। विशेष रूप से उसे गणित के सवाल बहुत अच्छे और दिलचस्प लगते थे।

अचानक एक दिन डिफोस्ट के पिता का निधन हो गया। उसके सारे सपने चूर–चूर हो गये। परिवार की सारी जिम्मेदारी का बोझ नन्हें व मासूम डिफोस्ट के छोटे–छोटे कंधों पर आ गया। उसके पिताजी चप्पल व जूते बनाने का काम किया करते थे। अतः उसकी माँ ने नन्हे डिफोस्ट को भी इस काम में लगा दिया।

एक दिन जब डिफोस्ट नये बने हुए जुते सूखाने के लिए धूप में रखने जा रहा था तो उसकी नजर एक चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया को देखते ही उसे याद आया कि कल ही मोहल्ले के शरारती लड़के ने उस चिड़िया का घोंसला नष्ट कर दिया था। आज वही चिड़िया फिर से अपने घोंसले को बनाने के लिए एक–एक तिनका चुन–चुन कर इकट्ठा कर रही थी। चिड़िया के इस काम को देखकर उसकी आंखें चमकने लगीं, उसने मन ही मन कुछ निश्चय किया। उसे जैसे नई शक्ति मिली, नई प्रेरणा मिली।

अब वह जूते बनाकर धूप में सूखने के लिए रख देता और जब तक जूते सूखने में जो समय लगता उस खाली समय में वह गणित की किताबें पढ़ता रहता था और जब जूते सूख जाते तब वह जूते बनाने के लिए अगले काम में जुट जाता।

इसी तरह बालक डिफोस्ट ने माध्यमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक ग्रहण की और फिर एक दिन वह विश्व का जाना–माना गणितज्ञ बन गया।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

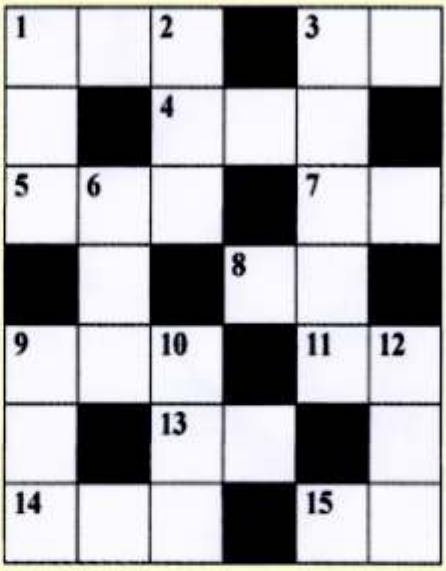

बाएं से दाएं →

1. जैसी .... वैसी भरनी।
3. मशहूर गायिका .... मंगेशकर को 'स्वर कोकिला' भी कहते हैं।
4. टायर ... से बनते हैं।
5. इस पंक्ति में छुपे एक देश का नाम ढूंढिए : वह पैन लाओ सतीश।
7. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने वाली रेखा।
8. कलेजे पर ... लोटना यानि ईर्ष्या से जलना।
9. क्यूबा देश की राजधानी।
11. 'नदियां' का एकवचन।
13. ... के घूंट पीना यानि बहुत कष्ट सहना।
14. भगवान विष्णु के जिस अवतार के तीन कदमों में तीनों लोकों को नाप लिया था।
15. किसी संख्या को उसी संख्या में भाग देने पर जो भागफल मिलता है।

ऊपर से नीचे ↓

1. जवाहर लाल नेहरू की पत्नी का नाम ... नेहरु था।
2. सरस का विपरीत शब्द।
3. 'लड़का' शब्द की भाववाचक संज्ञा।
6. कनाडा देश की राजधानी ओटावा जिस नदी के किनारे स्थित है।
9. सूजी या आटे को घी में भूनकर चीनी के साथ पकाया गया एक पकवान।
10. शुद्ध शब्द छाटिंए : (नाखुन / नाखून)
12. अंधे को ... दिखाना यानि मूर्ख को शिक्षा देना।

(वर्ग पहली के उत्तरी इसी अंक में हैं)

जन्मदिन मुबारक

रेणुका (इंदौर)

शौर्य (चेम्बूर)

सुदीक्षा (नागपुर)

पुलकित (दिल्ली)

वीना (जयसिंहपुर)

कियान (पुणे)

प्रीत (सोलापुर)

कुणाल (गाँधी नगर)

अभय (पठानकोट)

सुकर्ण सिंह (दिल्ली)

दीक्षा (समाना मण्डी)

रिद्धिमा (हल्द्वानी)

समृद्धि (राजकोट)

बिन्दू (ग्वाहिटी)

विधिता (बेलगाम)

आयुष (इंदौर)

महक (इंदौर)

वंशिका (गुड़गांव)

निर्लेप (विरार)

मोहित (दिल्ली)

चिराग (पिम्परी)

जशिथ (उल्हासनगर)

अवंति (भिवण्डी)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक व्यक्ति ने अपने घर के पास एक बगीचा लगा रखा था। वह रोज़ बगीचे में काफी समय व्यतीत करता था।
एक दिन उसने बाग में एक पेड़ की टहनी से लटकता एक तितली का कोकून देखा। वह कोकून को बार-बार देखता था।

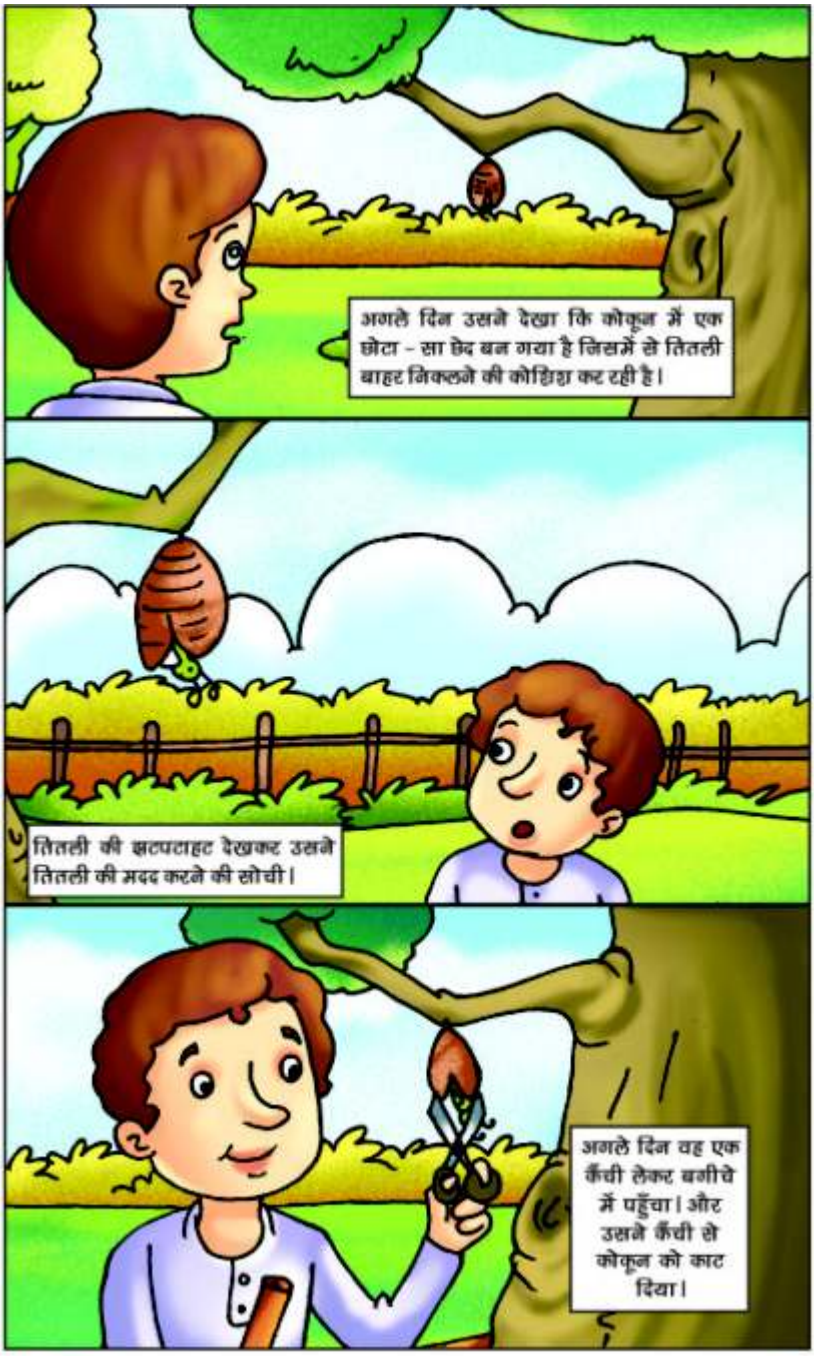
अगले दिन उसने देखा कि कोकून में एक छोटा - सा छेद बन गया है जिसमें से तितली बाहर निकलने की कोशिश कर रही है।
तितली की छटपटाहट देखकर उसने तितली की मदद करने की सोची।
अगले दिन वह एक कैंची लेकर बगीचे में पहुँचा। और उसने कैंची से कोकून को काट दिया।

तितली आसानी से कोकून से बाहर आ गई, जिसके अभी पंख नहीं निकले थे।
तितली को बाहर आते देख वह बहुत प्रसन्न हुआ और तितली के उड़ने की प्रतीक्षा करने लगा।
पर उसने देखा कि तितली उड़ने मे असफल हो रही है।
वह बहुत निराश हो गया और उसे अपनी जल्दबाजी के लिए पछतावा होने लगा।

तितली को पूर्ण विकास के लिए तरल और समय की आवश्यकता होती है।
परन्तु जल्दबाजी के कारण तितली का विकास रुक गया जिसके परिणामस्वरूप वह उड़ न सकी।
फिर उसे समझ आया कि कोकून से तितली बनने की प्रक्रिया प्रकृति ने कठिन बनाई है, जिससे वह सही तरह से विकसित हो सके।

समाचार समाचार समाचार

उल्का बौछार जीवन का कारण बनी

सुदूर अतीत में पृथ्वी पर गिरने वाले क्षुद्रग्रहों के बड़े–बड़े टुकड़े न केवल प्राणी जगत के संसार का कारण बने, बल्कि नये जीवन के उद्भव में भी सहायक हुए। शायद इस 'बमबारी' की वजह से ही धरती पर अधिकांश आधुनिक प्रजाति के पूर्वजों का जन्म हुआ।

47 करोड़ साल पहले अपेक्षाकृत कम समय में जानवरों और पौधों की दुनिया की विविधता में तेजी से वृद्धि की व्याख्या करने के लिए एक परिकल्पना की पुष्टि हुई है। पुरातत्व विज्ञानी इस संक्षिप्त अवधि को, जब जीवित प्राणियों की आधुनिक कक्षाएं प्रकट हुईं, 'ऑर्डाविशियन विकिरण' के नाम से जानते हैं। स्टॉकहोम के पास एक खदान में जहाँ गुलाबी संगमरमर का उत्पादन होता है, 20 साल की अवधि में संगमरमर संरचनाओं में सौ से अधिक उल्कापिंड मिले हैं। प्राप्त खोजों से प्रेरित परिकल्पना के अनुसार 47 करोड़ साल पहले धरती पर आग के गोलों की भारी बौछार हुई जो एक करोड़ साल तक चली। गोलों का आकार संभवतः एक किलोमीटर तक हो सकता है। यह इतना बड़ा आकार नहीं है जो वनस्पतियों और प्राणियो के सर्वव्यापी विनाश का कारण बन सके। उदाहरण के लिए 10 कि.मी. साइज के पत्थर ऐसा करने में सक्षम हैं। नई परिस्थितियों में रहने वाले जीवों को बदलती स्थिति के अनुकूल नए रास्ते ढूंढने पड़े। जो ऐसा नहीं कर पाए, वे नष्ट हो गए। (वार्ता)

बदल रहा है मछलियों का दिमाग

जलवायु परिवर्तन के कारण मानव जाति पर पड़ने वाले दुष्परिणामों पर तो बहुत गंभीर चर्चाएं होती रहती हैं लेकिन इसका उतना ही बुरा असर जलजीवों पर भी हो रहा है। ब्रिटिश रिपोर्ट के मुताबिक समुद्र में रहने वाली छोटी मछली हर क्षण कई खतरों का सामना करती है और इसे इस जुझारू जीवन में रहने में सहायता करता है उसका दिमाग और प्रतिक्रियावादी क्षमता। यह सुनकर कितना अजीब लगेगा कि कोई मछली खुद ही बड़ी मछली के मुंह में चली जाए। जी हाँ जलवायु परिवर्तन मछलियों पर कुछ ऐसा ही असर डाल रहा है जिससे उनकी दिमागी क्षमता प्रभावित हो रही है और वे अपनी जुझारू शक्ति गंवा रही हैं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र में कार्बन–डाइऑक्साइड का स्तर दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। कार्बन–डाइऑक्साइड के बढ़ते स्तर के कारण समुद्र का पानी अम्लीय हो रहा है। इसी कारण समुद्र में शैलभित्ती के पास रहने वाली मछलियों का बर्ताव इससे परिवर्तित हो रहा है। वातावरण में मौजूद कार्बन–डाइऑक्साइड समुद्री जल में मिल जाता है।

शोध में पाया गया है कि मछलियों की संवेदी प्रणाली प्रभावित हो जाती है। प्रयोगशाला में किए गए परीक्षणों से पता चला है कि मछलियों की घ्राण शक्ति ठीक रहती है लेकिन वे दो गंधों के बीच के अंतर को समझ नहीं पातीं। मछलियां दूसरी मछलियों को खाने वाले अन्य जीवों की गंध सूंघ तो लेती हैं लेकिन उससे सावधान नहीं होतीं।

शोध में पाया गया कि जब मछलियों को सामान्य जल और दूसरे मछलियों को खाने वाले जलजीवों की गंध से भरे जल में तैरने की छूट दी गई तो वे बड़ी आसानी से जलजीवों की गंध वाले जल में चली गईं। समुद्र का अम्लीय जल मछली के नर्वस सिस्टम के खास रिसेप्टर 'गाबा' को बधित कर देता है जिसके कारण दिमाग गंध पहचानने का संदेश नहीं भेज पाता है। 'गाबा' कई जलजीवों में मौजूद होता है। (वार्ता)

(संग्रहकर्ता : बबलू कुमार)

कविता : दीपक कुमार 'दीप'

फूल

रंग बिरंगे फूल खिले हैं,
धरती के इस आंगन में।
कलियां प्रेम से मुस्काती हैं,
फूलों के इस प्रांगण में।

रौनक बाग–बगीचों में है,
भौरों के आ जाने से।
झूम रही है कली–कली,
इनके गीत सुनाने से।।

गूंज रही है बाग–बाग में,
कोयल ने जो छेड़ी तान।
फूल खुशी से नाच रहे हैं,
देकर मीठी सी मुस्कान।।

हर इक आंगन खुशियों से,
महक उठा गुलज़ार हुआ।
'दीप' स्वर्णिम नज़ारों से,
हर इक पल यादगार हुआ।।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर **'म'** अक्षर पर खत्म होते हैं। पैन या पेन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1. राजा जनक के सबसे बड़े दामाद कौन थे? ... म

प्रश्न 2. हिडिम्बा का पति कौन था? ... म

प्रश्न 3. सबसे कम जनसख्या वाला भारतीय राज्य कौन–सा है?... म

प्रश्न 4. केरल में बोली जाने वाली मुख्य भाषा कौन–सी है? ... म

प्रश्न 5. भारत का 'मिसाइल पुरुष' किसे कहा जाता है? ... म

प्रश्न 6. किस ऋषि ने अपनी पत्नी अहिल्या को पत्थर का बन जाने का श्राप दिया था ? ... म

प्रश्न 7. डिगबोई तेल क्षेत्र किस भारतीय राज्य में स्थित है? ... म

प्रश्न 8. इटली की राजधानी कौन–सी है? ... म

प्रश्न 9. संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग होता है उसे क्या कहते हैं ? ... म

प्रश्न 10. भारत का राष्ट्रीय गीत कौन–सा है? ... म

प्रश्न 11. सबसे भारी धातु कौन–सी है ? ...म

प्रश्न 12. किस ऋषि ने गणेश जी का एक दाँत तोड़ा था? .... म

प्रश्न 13. सिकंदर और पोरस का युद्ध किस नदी के किनारे लड़ा गया था? ... म

प्रश्न 14. महात्मा गाँधी ने मरने से पहले कौन से शब्द कहे थे? ... म

प्रश्न 15. गायत्री मंत्र की शुरूआत किस शब्द से होती है? ...म

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

प्रेरक–प्रसंग : नितिन ग्रोवर

नम्रता का पाठ

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन नगर की स्थिति का जायजा लेने के लिए निकले। रास्ते में एक जगह भवन का निर्माण कार्य चल रहा था। वे कुछ देर के लिए वहीं रूक गये और वहाँ चल रहे कार्य को गौर से देखने लगे। वे कुछ देर में उन्होंने देखा कि कई मजदूर एक बड़ा–सा पत्थर उठा कर ईमारत पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। किंतु पत्थर बहुत ही भारी था, इसलिए वह इतने मजदूरों के उठाने पर भी उठ नहीं पा रहा था।

ठेकेदार उन मजदूरों को पत्थर न उठा पाने के कारण डांट रहा था पर खुद किसी भी तरह उनकी मदद करने को तैयार नहीं था।

वॉशिंगटन यह देखकर उस ठेकेदार के पास आकर बोले, "इन मजदूरों की मदद करो। यदि एक आदमी और प्रयास करे तो यह पत्थर आसानी से उठ जाएगा।"

ठेकेदार वॉशिंगटन को पहचान नहीं पाया और रौब से बोला, "मैं दूसरों से काम लेता हूँ, मैं मजदूरी नहीं करता।" यह जवाब सुनकर वॉशिंगटन घोड़े से उतरे और पत्थर उठाने में मजदूरों की मदद करने लगे। उनके सहारा देते ही पत्थर उठ गया और आसानी से ऊपर चला गया।

इसके बाद वह वापस अपने घोड़े पर आकर बैठ गये और बोले, "सलाम ठेकेदार साहब, भविष्य में कभी तुम्हें एक व्यक्ति की कमी मालूम पड़े तो राष्ट्रपति भवन में आकर जॉर्ज वांशिगटन को याद कर लेना।"

यह सुनते ही ठेकेदार ने उनके पैर पकड़ लिये और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगा। ठेकेदार के माफी मांगने पर वॉशिंगटन बोले, "मेहनत करने से कोई छोटा नहीं हो जाता। मजदूरों की मदद करने से →

जानकारी : किरण बाला

अंधेरे में चमकती जानवरों की आंखें

क्या आपकी आंखें अंधेरे में चमकती हैं? नहीं न। लेकिन प्रकृति की लीला बड़ी विचित्र है। उसने धरती पर ऐसे प्राणियों की भी रचना की है जिनकी आंखें रात के अंधेरे में भी चमकती हैं।

आप जानना चाहेंगे कि कुछ जानवरों की आंखे अंधेरे से क्यों चमकती हैं। दरअसल उनकी आंखों में एक विशेष प्रकार के मणिभीय पदार्थ की पतली सी परत होती है, जो आंख पर पड़ने वाले प्रकाश को परावर्तित कर देता है। यह परावर्तित प्रकाश ही चमक का कारण होता है। होता यह है कि रात्रि में कम से कम प्रकाश भी जब इस परत पर पड़ता है, तो वह परावर्तित हो जाता है और हमें आंखें चमकती हुई दिखाई देती हैं। ये जानवर अंधेरे में भी अच्छी तरह देख सकते हैं।

जिन जानवरों की आंखें रात में चमकती है, उन सबकी चमक का रंग एक जैसा नहीं होता। यह चमक लाल, सफेद या हल्की पीली दिखाई देती है। जानते हैं ऐसा क्यों? जिनकी आंखों में खून की नसें ज्यादा होती हैं उनकी आंखों की चमक लाल होती है। इसके विपरीत जिन जानवरों की आंखों में इन नसों की कमी होती है उनकी आंखों की चमक सफेद या हल्की पीली होती हैं।

बिल्ली, शेर, चीते आदि का शरीर तो रात के अंधेरे में दिखाई नहीं देता। हाँ, सिर्फ आंखें चमकीली अवश्य दिखाई देती हैं जिनसे हम डर जाते हैं।

• • •

→

तुम उनका सम्मान हासिल करोगे। याद रखो, मदद के लिए सदैव तैयार रहने वालो को ही समाज में प्रतिष्ठा हासिल होती है। इसलिए जीवन में ऊँचाईयां हासिल करने के लिए व्यवहार में नम्रता का होना बेहद जरूरी है।'' उस दिन से ठेकेदार का व्यवहार बिल्कुल बदल गया और वह सभी के साथ नम्रता से पेश आने लगा।

• • •

लोककथा : किशोर डैनियल

अपना अपना भाग्य

एक लोककथा प्रचलित है। एक राजा था। उसके तीन बेटियां थीं। जो बहुत गुणवान थी। परन्तु सबसे छोटी बेटी बुद्धिमान और गुणवान भी थी।

एक बार राजा ने तीनों राजकुमारियों से अलग–अलग पूछा कि तुम किसके कर्म और भाग्य से सुखी हो?

इस पर दो राजकुमारियों ने तो अपने पिता के कर्म के कारण सुखी बताया परन्तु सबसे छोटी राजकुमारी ने कहा– पिताजी, मैं अपने कर्म और अपने भाग्य से सुखी हूँ और अपने ही कर्म से दुःखी भी हूँ क्योंकि व्यक्ति को अपने कर्म और भाग्य से ही मिलता और बिछुड़ता है।

बार–बार पूछने पर भी राजकुमारी ने यही बात दोहराई तो राजा क्रोधित हो गया और उसने कहा कि मैं देखता हूँ तुम्हारा भाग्य कहाँ तक तुम्हारा साथ देता है। उसने राजकुमारी को दूर जंगल में छोड़ आने का आदेश सैनिकों को दिया।

राजा के आदेश से सैनिक राजकुमारी को जंगल में छोड़ आये। वह जंगल में भटकती–भटकती एक सरोवर के किनारे पहुँची वहाँ उसने अपनी प्यास बुझाई तभी उसकी दृष्टि राजहंसों के एक जोड़े पर गई जो पास ही एक पेड़ पर बैठा था।

वे आपस में बातें कर रहे थे। हंसनी ने हंस से कहा– यह कन्या लगती तो राजकुमारी है पर यहाँ जंगल में क्या कर रही है? यह दुःखी और परेशान भी लगती है।

राजहंस ने कहा– लगता तो मुझे भी ऐसा ही है। क्यों न हम उसी से चलकर पूछ लें।

उसी क्षण दोनों ने पास आकर राजकुमारी से पूछा– तुम अकेले यहाँ जंगल में क्यों बैठी हो और तुम्हारी उदासी का कारण क्या है?

हंस के मुख से मनुष्य की वाणी सुनकर राजकुमारी को बहुत आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगी कि यह पक्षी होकर भी मानव की बोली बोल रहा है।

राजहंस फिर बोला– हम देवलोक के निवासी हैं। हम यहाँ भ्रमण करने आये हैं। तुम्हें इस हालत में देखकर हमसे रहा न गया। हम

मनुष्य की हर प्रकार की भाषा बोल और समझ सकते हैं।

उनके पूछने पर राजकुमारी ने अपनी आप–बीती उन्हें बताई।

इस पर हंसनी बोली– ईश्वर ने हमें तुम्हारे पास तुम्हारी सहायता के लिए भेज दिया है। तुम चिन्ता न करो। तुम मेरी पीठ पर सवार होकर हमारे साथ चलो। हम तुम्हारी हर तरह से मदद करेंगे।

यह सुनकर राजकुमारी प्रसन्न हो गई और फिर हंसनी की पीठ पर बैठ गई और हंसनी उड़ चली।

हंसों का जोड़ा उसे लेकर देवलोक पहुँचा। जहाँ देवलोक के राजकुमार से उसकी भेंट हुई। देवलोक का राजकुमार उससे प्रभावित हुआ और राजकुमारी से उसने विवाह का प्रस्ताव रखा।

राजकुमारी भी उस प्रस्ताव से सहमत हो गई और दोनों जीवन–साथी बन गये। राजकुमारी अब देवलोक में सुखपूर्वक रहने लगी।

– यह कहानी काल्पनिक है परन्तु यह सत्य है कि हर व्यक्ति अपने कर्म से ही दुनिया में आत्म–विश्वासी हो पाता है और अन्ततः सफलताएं भी तभी मिलती हैं। ◆

प्रस्तुति : राधा नाचीज़ (नजफगढ़)

पहेलियां

1. अंदर बाल ऊपर चाम,
बीच बाजार के बिके मुदाम।
उसको खाय खास व आम,
तुम बतलाओ उसका नाम।

2. काला है रंग मेरा,
कोयल का हूँ बिरादर।
फिर भी न जाने क्यों,
होता रहता है अनादर।

3. एक टांग से खड़ा हुआ हूँ,
एक जगह पर अड़ा हुआ हूँ,
भारी छाता मैंने है ताना,
सब जीवों को देता हूँ खाना।

4. सर्दी में प्यारा लगता,
गर्मी में करे तबाही।
स्थिर रहता पर कहते उसको,
आसमान का राही।

5. पेट कटे वचन बन जाती,
सिर कटे से यल।
मैं तो मीठा राग सुनाकर,
मीठा पाती फल।

6. अन्दर जाना है तो भी,
उसके अंदर से निकलो।
बाहर आना है तो भी,
उसके अंदर से निकलो।

7. कान खड़े कर लंबे–लंबे,
पछताता है बल्लू।
कछुए ने बाजी मारी,
तुम क्यों सोए थे लल्लू।

8. तन गई गगन में,
सतरंगी डोर।
झुके हुए उसके,
धरती पर छोर।

9. तीन अक्षर की मेरी काया,
ठंडी हवा देना काम।
गर्मी में तो बिन मेरे,
हो जाता आराम–हराम।

10. तीन पांव हैं, हाथ नहीं,
तन है बड़ा कठोर।
आती–जाती कहीं नहीं,
खड़ी रहे नित ठोर।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें

बाल कविता : बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

रेल

तेज गति से प्यारी रेल,
पटरी पर दौड़ लगाती।
भारत के कोने–कोने की,
सबको सैर कराती।

गाँव शहर जंगल खेतों का
चक्कर रोज लगाती।
दिल्ली हो या कोलकाता,
सबको घर तक पहुँचाती।

सर्दी गर्मी और बरसात,
हँस कर समय बिताती।
आंधी तूफानों से देखो,
जरा न ये घबराती।

स्टेशन आने पर रुक कर,
थोड़ा सा सुस्ताती।
फिर चल पड़ती अपने पथ पर,
बस चलती ही जाती।

बाल कविता : राजेंद्र निशेश

चलती जाती है

मंज़िल तक पहुँचाती है,
रेल समय पर जाती है।
चुन्नू, मुन्नू सब बैठो,
सब में मेल बढ़ाती है।

हरदम चलती जाती है,
छुक–छुक गीत सुनाती है।
समय गँवाना ठीक नहीं,
सब को पाठ पढ़ाती है।

सब नगरों में आती है,
चीजें नई दिखाती हैं।
ज्ञान हमारा बढ़ता है,
इसीलिए यह भाती है।

कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

जम्बू बन गया सयाना

जम्बू भालू अपनी कक्षा का सबसे शरारती लड़का था। उसके पिता एक सर्कस कम्पनी के मालिक थे।

जम्बू अपने साथियों पर अपनी अमीरी का रौब जमाता था। उसकी शरारतों से सभी परेशान थे। राह चलते किसी को टंगड़ी मार कर गिरा देना या चुपके से किसी को कांटे चुभो देना उसके लिए मामूली बात थी। वह अध्यापकों से भी नहीं डरता था।

जम्बू की कक्षा का ही एक छात्र था, चम्पू हिरण। वह पढ़ाई में बहुत होशियार था और हर वर्ष प्रथम श्रेणी में पास होता था। सभी अध्यापक उसकी खूब प्रशंसा करते। इस वर्ष तो उसे 'जंगल विद्यालय' के सर्वश्रेष्ठ छात्र के रूप में सम्मानित किया गया था।

चम्पू की प्रशंसा से जम्बू बहुत चिढ़ता। वह मन ही मन चम्पू को परेशान करने की योजना बनाता रहता।

एक दिन कक्षा चल रही थी। चम्पू के साथ वाली सीट पर जम्बू बैठा था। उसने कोई चित्र बनाने के लिए चम्पू से रंगों की डिबिया मांगी। चम्पू ने अपनी रंगों की डिबिया उसे दे दी।

जब छुट्टी की घंटी बजी तो काली बकरी, लम्बू जिराफ, सोनू लोमड़, कुबड़ा ऊंट, रोमी बंदर, भोलू मेमना, चिंटू हाथी उठकर कक्षा से बाहर जाने लगे। चम्पू हिरण ने भी अपना बस्ता समेटते हुए जम्बू से अपनी रंगों की डिबिया मांगी।

लेकिन जम्बू ने घूरते हुए रंगों की डिबिया देने से मना कर दिया। चम्पू को बहुत दुःख हुआ। वह चुपचाप घर चला गया।

अगले दिन कक्षा में आते ही चम्पू ने फिर से जम्बू से रंगों की डिबिया मांगी। इस बार जम्बू ने साफ इन्कार करते हुए कहा– "मैंने तुम से रंगों की डिबिया कब ली? मेरे पास अच्छी–अच्छी रंगों की डिबिया हैं। क्या तुम मुझे चोर समझते हो?"

चम्पू को जम्बू से ऐसी उम्मीद नहीं थी। उसे बहुत दुःख हुआ। रंगों की डिबिया उसके पापा मंटू हिरण ने दिलवाई थी। उन्होंने कहा था– "बेटा, यह बहुत महंगे रंगों की डिबिया है, इसे संभालकर रखना।"

चम्पू सोचने लगा कि वह अब पापा को क्या जवाब देगा? घर की हालत यह है कि पढ़ाई–लिखाई का खर्च भी मुश्किल से चल पाता है। परीक्षाएं भी आने वाली हैं। वह परीक्षा में किससे रंगों की डिबिया मांगेगा? सोचते–सोचते उसकी आंखें भर आईं।

तभी उसके विद्यालय के गुरुजी मोटू हाथी उधर से निकले। चम्पू को देखकर उन्होंने प्यार से पूछा– "बेटा, क्या बाता है, बड़े उदास हो? किसी ने कुछ कहा क्या?"

चम्पू ने जम्बू द्वारा रंगों की डिबिया हथियाने की बात रोते हुए मोटू हाथी को बता दी।

"तुम चिंता न करो। रंगों की डिबिया तुम्हें जल्दी ही मिल जाएगी।" मोटू हाथी ने उसे धीरज बंधाया।

अगले दिन मोटू हाथी ने जम्बू भालू को अपने दफ्तर में बुलाया और कहा– "जम्बू बेटा, काफी दिनो से मैं सोच रहा हूँ कि तुम्हें क्लास का मॉनिटर बना दिया जाए। तुम्हारे मॉनिटर बनने से छात्र अनुशासन में रहेंगे। इसके लिए पहले मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्लास के लड़के तुम्हारे बारे में क्या सोचते हैं... कहीं वे तुम्हारे कारण परेशान तो नहीं होते?"

मॉनिटर की बात सुनकर जम्बू खुशी से फूला नहीं समाया। वापस कक्षा में आकर उसने निश्चय किया कि अब वह अपने सहपाठियों को परेशान करना छोड़ देगा।

उसे डर था कि कहीं उसके गलत व्यवहार की शिकायत कोई छात्र गुरुजी से न कर दे। यदि ऐसा हुआ तो वह मॉनिटर बनने से रह जाएगा।

चम्पू उसके पास ही बैठा हुआ था। वह अब भी बहुत दुःखी व उदास था। जम्बू उसका चेहरा देखकर एकदम सहम गया। उसने सोचा– 'चम्पू रंगों की डिबिया वाली बात गुरूजी को अवश्य बता देगा।'

जम्बू ने तुरन्त उसके कंधे पर हाथ रखकर प्यार से कहा– "तुम उदास क्यों हो चम्पू भाई? अरे यार, मैंने तो तुमसे मजाक करने के लिए रंगों की डिबिया देने से मना कर दिया था। चिंता मत करो, शाम को मेरे साथ घर चलना, मैं तुम्हें रंगों की डिबिया वापस दे दूंगा।"

चम्पू ने हैरानी से जम्बू को देखा। उसके व्यवहार में आया बदलाव उसके लए बिल्कुल नया था। उसका मन खुशी से भर गया।

अगले दिन वह क्लास में आया तो रंगों की डिबिया उसके पास थी। उसने गुरूजी को भी जम्बू के व्यवहार में आए बदलाव की बात बताई तो वे मुस्कुराने लगे।

मोटू हाथी की तरकीब ने शैतान जम्बू को सयाना बना दिया था। उन्होंने उसे कक्षा का मॉनिटर भी बना दिया। अब स्कूल के सभी छात्र उससे खुश रहने लगे। ◆

भैया से पूछो

– अंजू छत्तानी (गोंदिया)

प्रश्न : भैया जी! बच्चों को किस उम्र में ज्ञान (ब्रह्मज्ञान, प्रभु की जानकारी) लेनी चाहिए? ज्ञान लेने के बाद उन्हें संगत से किस तरह जोड़े रखें।

उत्तर : दुनियावी ज्ञान तो बच्चों के पैदा होते ही घर के माहौल से होना प्रारम्भ हो जाता है। वातावरण उनमें परिपक्वता लाता है। ब्रह्मज्ञान की अनुभूति योग्य व पूर्ण सन्त द्वारा 10–11 की उम्र के बाद कभी भी हो सकता है। बच्चों की संगत के कार्यक्रम उनके स्तर के अनुसार बनाकर उनको संगत से जोड़ें रखें।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

प्रश्न : जब हम किसी कार्य की शुरूआत करते हैं तो हमारे अन्दर इतना अधिक उत्साह होता है कि जैसे सफलता हमें मिल ही जायेगी। पर समय बीतने के साथ ही उत्साह कम हो जाता है और सफलता की जगह कभी–कभी असफलता प्राप्त होती है– ऐसा क्यों?

उत्तर : कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व पूर्ण अड़चनों का पता नहीं होता। कार्य प्रारम्भ हो जाने के बाद अपनी क्षमता व अड़चनों से लड़ने पर उत्साह कम हो जाता है। इसी कारण असफलता भी मिलती है।

– प्रिया टकरानी (सिवनी)

प्रश्न : हमें किस तरह के लोगों के साथ मित्रता रखनी चाहिए?

उत्तर : प्रभु–भक्त, सन्त स्वभाव व आशावादी लोगों के साथ।

– के.के. नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : क्या झूठी प्रशंसा के पुल बांधना उचित है?

उत्तर : कदापि नहीं।

प्रश्न : क्या सुखी इन्सान की पहचान सम्भव है?
उत्तर : बहुत हद तक।

– गीतू खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : मेहनत करने पर भी सफलता न मिले तो क्या करना चाहिए?
उत्तर : स्वयं का पुनः अवलोकन कर दोबारा अधिक उत्साह के साथ कार्य आरम्भ कर देना चाहिए।

प्रश्न : हमारा ध्यान दूसरों की गलतियों की तरफ जल्दी क्यों जाता है?
उत्तर : अपनी गलतियों को स्वीकार करना स्वयं को अच्छा नहीं लगता इसलिए।

– गुरदीप कौर भद्दल (रोपड़)

प्रश्न : वास्तविक पुरुषार्थ के क्या अभिप्राय है?
उत्तर : मनुष्य द्वारा उठाये गये सार्थक कदमों का सकारात्मक फल।

– सत्येन्द्र कुमार (रायगढ़)

प्रश्न : अपने आपको समझने के लिए क्या करना चाहिये?
उत्तर : किसी तत्वदर्शी गुरु की खोज।

प्रश्न : अच्छाई किन चीजों से प्राप्त होती है?
उत्तर : सत्संगति, सद्व्यवहार और सदाचार से।

प्रश्न : इस जमाने में सुखी कौन है?
उत्तर : जिसके पास सन्तोष धन है।

प्रश्न : लोग आपस में क्यों लड़ते हैं?
उत्तर : लोग नहीं उनका स्वार्थ आपस में लड़ता है।

– मदन राणा (बुढलाडा)

प्रश्न : इन्सान से ज्यादा क्या किसी चीज़ की भी कीमत है?
उत्तर : नहीं।

प्रश्न : सद्गुरु किसे कहते हैं?
उत्तर : जो परम–सत्य को जानता हो और दूसरों को परम–सत्य की जानकारी दे सकता हो।

जानकारी : किरण बाला

स्मार्ट घड़ी

घड़ियां तो आप और हम सभी पहनते हैं लेकिन उनमें ऐसी कोई खासियत नहीं होती जो दूसरों का ध्यान आकर्षित कर सके। अब स्मार्ट घड़ियों का जमाना है।

वैज्ञानिकों ने एक खास तरह की घड़ी बनाई है। इसे ब्लूटूथ के जरिए मोबाइल से कनेक्ट किया जा सकेगा। जिसके बाद मोबाइल पर आने वाले एसएमएस को इसी घड़ी पर पढ़ सकेंगे। "पेबेल" नामक इस घड़ी की खास बात यह है कि यह मोबाइल पर मौजूद आपके म्यूजिक को भी कंट्रोल कर सकेगी। इसे इंटरनेट से जोड़कर एप्स भी डाउनलोड किए जा सकते हैं। साथ ही इसमें जीपीएस सुविधा भी है। इसमें तकरीबन 150 मुफ्त गेम लोड किए गये हैं। इसे शीघ्र मार्केट में लॉन्च किया जाएगा।

महंगी और अलग–अलग तकनीक की घड़ियों में अब एक और घड़ी शामिल हो गई है। यह एक फैशन एसेसरी के रूप में पहने जाने वाले ब्रेसलेट के समान है। खास बात है इसका लुक; क्योंकि ये किसी घड़ी की तरह नहीं दिखता। इसमें घड़ी का डॉयल भी नहीं है और न ही समय बताने वाले कांटे हैं। लेकिन बटन दबाते ही तुरंत समय बता देगा। दूसरी बार बटन दबाने पर तारीख फ्लैश होती है। इसका नाम वॉल स्विच वॉच है। इसमें डायल के नीचे एलईडी लगे हैं जो समय दिखाते हैं। इसमें किसी तरह के फैंसी अलार्म नहीं है। इसका आकार सामान्य घड़ियों जितना ही है। ये घड़ी चार रंगों में मौजूद है, काला, नीला, लाल और सफेद। इसकी कीमत लगभग 7500 रुपए है।

पहेलियों के उत्तर

1. आम, 2. कौआ 3. पेड़ 4. सूरज 5. कोयल 6. दरवाजा
7. खरगोश 8. इन्द्रधनुष 9. कूलर 10. तिपाई।

बाल कहानी : मदन देवड़ा

जब हार जीत में बदली

कथा महाभारत काल की है। माता विदुला का पुत्र संजय एक छोटे से राज्य का राजा था। पड़ोसी राजा ने कमजोर समझकर उसके राज्य पर आक्रमण कर दिया। संजय इस युद्ध में हार गया। अपने पुत्र की हार से माता विदुला को बड़ा दुःख हुआ।

एक दिन वह अपने पुत्र से बोली– 'संजय! तू क्षत्रिय पुत्र है। क्षत्रिय का धर्म है या तो युद्ध में 'विजयश्री' प्राप्त करना या मर जाना। तेरी हार अपने कुल को कलंकित कर रही है। अपनी माता से ऐसी बातें सुनकर भी संजय के मन में उत्साह नहीं आया बल्कि वह इसके विपरीत होकर बोला– 'माँ, मैं तुम्हारा एकमात्र पुत्र हूँ, यदि मारा गया तो?

तभी माता उसकी पीठ थपथपाती हुई बोली– 'बेटे! तू क्षत्रिय है और क्षत्रिय इस प्रकार की बातें नहीं करते। यदि तू अपने मन में दृढ़ संकल्प करके पुनः युद्ध की तैयारी कर ले तो सारे साधन फिर से जुट जायेंगे, तेरा छिना हुआ राज्य फिर से प्राप्त हो जाएगा। मैं न केवल तेरी माँ हूँ बल्कि क्षत्राणी भी हूँ और क्षत्राणी कभी भी अपने पुत्र को उसके कर्त्तव्य से डिगा नहीं सकती।

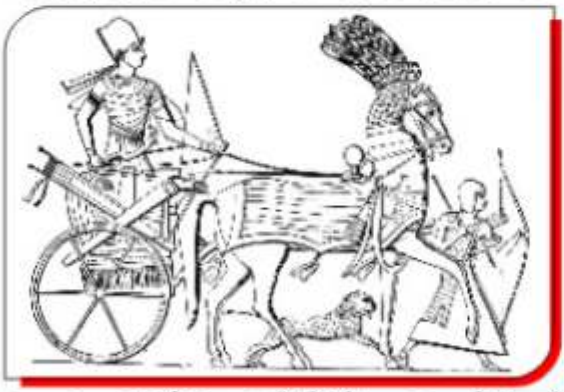

अपनी माता के ये वचन सुनकर संजय का उत्साह जाग उठा। और कुछ ही दिनों बाद उसने अच्छी सेना तैयार करके शत्रु राजा पर चढ़ाई कर दी। उसकी सेना के सामने शत्रु–सेना के पैर उखड़ गए। इस तरह संजय ने अपना हारा हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर लिया।

बच्चे और

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

बच्चों में गुण बहुत हैं, छू सकते आकाश।
नैतिक शिक्षा से करें, इनका स्वस्थ विकास।
नैतिक शिक्षा के समय, रखिये इसका ध्यान।
बच्चे भी अनुभव करें, मान और सम्मान।
छोटे बच्चे चाहते, मनचाहा आनंद।
नैतिक शिक्षा ये कभी, करते नहीं पसंद।
नैतिक शिक्षा भी कभी, जब हद से बढ़ जाए।
बच्चा विद्रोही बने, या इससे कतराय।

नैतिकता से परवरिश, बहुत कठिन यह काम।
चूक जरा सी करेगी, सबका काम तमाम।
बच्चे नैतिक बनेंगे, मॉडल बनिये आप।
देख–देख कर आपको, बच्चे बनते आप।
धीरे–धीरे दीजिए, बच्चों को यह ज्ञान।
नैतिकता से बनेंगे, आप सफल इन्सान।
अलग–अलग होती प्रकृति, इसे जानिये आप।
वरना शिक्षा बनेगी, जीवन का अभिशाप।

नैतिक शिक्षा

नैतिक शिक्षा दीजिए, उद्धरणों के साथ।
असर पड़ेगा बाल पर, कुछ आयेगा हाथ।
सीधी–सीधी बात पर, बच्चे दे कम ध्यान।
बात घुमा कर कीजिये, दूर सदा अज्ञान।
नैतिक शिक्षा कटु बड़ी, नहीं सुनेंगे बाल।
सुगर कोट कर दीजिए, फिर देखिये कमाल।
बात एक है ढंग दो, कहन–कहन का फेर।
एक लगे अंगूर सी, एक लगे मन बेर।
सबसे पहले समझिये, इनका सरल स्वभाव।
फिर इस शिक्षा का पड़े, गहरा बहुत प्रभाव।
बच्चों से विकसित करें, सकारात्मक सोच।
खेल भावना भी करें, ज्यों क्रिकेट का कोच।
बाल सभी नैतिक बनें, यह नैतिक दायित्व।
नैतिकता पूरा करे, बच्चों का व्यक्तित्व।
भोजन पानी जिस तरह, लेते नियमित नित्य।
नैतिक शिक्षा के लिए, आवश्यक साहित्य।
बच्चे नैतिक बन गये, सफल हो गये आप।
मिट जायेंगे आपके, जीवन के अभिशाप।

लघुकथा : प्रेम नारायण गुप्ता

योगदान

एक बार एक जंगल में भयंकर आग लग गई। सभी आग बुझाने में जुट गए। वहीं जंगल में एक नन्हीं गौरैया भी रहती थी। सबको आग बुझाने में जुटे देख नन्ही गौरैया से भी नहीं रहा गया। वह भी अपनी नन्हीं चोंच में पानी भर–भरकर आग पर डालने लगी।

एक कौआ जो दूर एक पेड़ की डाल पर बैठा यह तमाशा देख रहा था, गौरैया के पास आया और बोला, "क्या तुम समझती हो कि तुम्हारी नन्हीं चोंच का बूँद भर पानी इस भयंकर आग को बुझाने में कोई सहायता कर सकेगा?"

गौरैया ने चोंच का पानी आग पर डालते हुए जवाब दिया, "ये तो मैं नहीं जानती पर एक बात जरूर जानती हूँ कि जब भी आग के बारे में बातें होंगी मेरा नाम आग लगाने वालों अथवा तमाशा देखने वालों में नहीं बल्कि आग बुझाने वालों में लिखा जाएगा।"

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

ध्वज	:	तिरंगा
राष्ट्रीय चिह्न	:	अशोक चक्र
राष्ट्र गान	:	जन गण मन अधिनायक जय हे
राष्ट्र गीत	:	बन्दे मातरम्
राष्ट्रीय पशु	:	बाघ
जलीय जीव	:	गंगा डालफिन
राष्ट्रीय पक्षी	:	मोर
राष्ट्रीय पुष्प	:	कमल
राष्ट्रीय वृक्ष	:	बरगद
राष्ट्रीय फल	:	आम
राष्ट्रीय खेल	:	मैदानी हाकी
राष्ट्रीय पंचांग	:	शक संवत्

प्रस्तुति : हरजीत निषाद

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

सबका अपहरण कर लो

मालव प्रांत का राजा बलवंत प्रताप बहुत नेक और दयालु था। वह अपनी, प्रजा की खुशहाली के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता। एक बार जब वह वन भ्रमण पर था तो उसे गाय के रंभाने की करुण ध्वनि दूर से आती सुनाई दी। वह तेजी से उस ओर बढ़ गया और वहाँ जाकर देखा कि एक शेर ने एक गाय को घेर रखा है और उस पर आक्रमण करना ही चाहता है।

राजा बलवंत प्रताप अपना तीर शेर पर चलाता इसके पहले ही शेर आहट पाकर भाग गया। गाय ने कृतज्ञ स्वर में कहा– 'राजन आज आपने मेरे प्राणों की रक्षा की, आपकी बहुत आभारी हूँ। मैं कामधेनु हूँ। आप जो भी मांगेगे मैं प्रदान कर सकती हूँ।

राजा बलवंत प्रताप बोला– ''बस मैं अपनी प्रजा को खुशहाल देखना चाहता हूँ लेकिन वह अत्यधिक निर्धन हैं और मैं अपना समस्त राजकोष लुटाकर भी उसकी दरिद्रता मिटा नहीं सकता इसलिए हे गौ माता आप मुझे इतनी स्वर्णमुद्राएं प्रदान कीजिए कि उन्हें बांटकर उन्हें खुश कर सकूं?''

'ठीक है मिल जाएंगी, तथास्तु'– कामधेनु तत्परता से बोली।

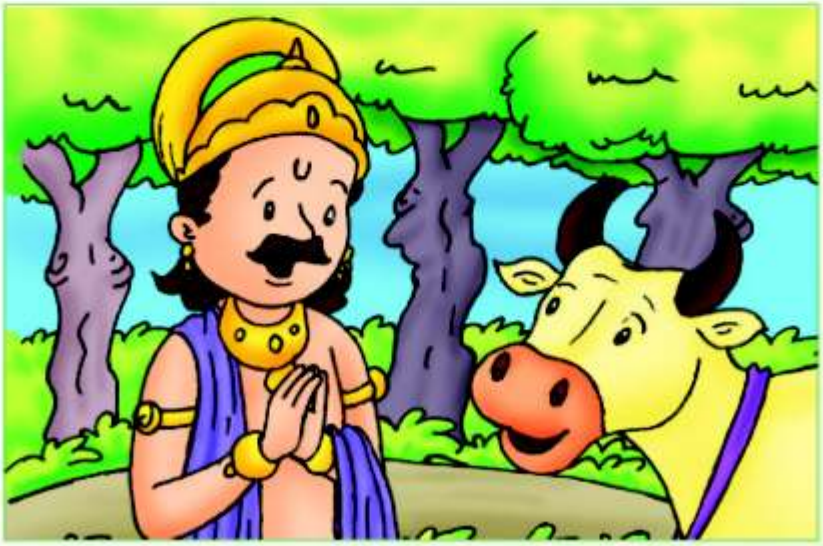

स्वर्णमुद्राएं पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और नित नये गाँवों में जाकर दोनों हाथों से प्रजाजनों को बांटने लगा। एक बार वह एक कबीले में पहुँचा तो वहाँ के निवासी स्वर्णमुद्रा बंटने की बात सुनकर प्रसन्न हो गए। इसके उपरांत उनके चेहरे पर मायूसी का आवरण देखकर राजा को हैरत हुई। उसने कबीला प्रमुख से कारण जानना चाहा तो उसने बताया– 'महाराज धन से अधिक हमें सुरक्षा की आवश्यकता है क्योंकि जान है तो जहान है।'

'बात क्या है थोड़ा खुलकर बताइए'– बवलंत प्रताप ने गंभीर स्वर में पूछा।

कबीला प्रमुख ने बताया– 'महाराज प्रत्येक रविवार को हमारे कबीले के कुछ बच्चों का अपहरण हो जाता है फिर वे वापस नहीं लौटते।

राजा चौक पड़ा– 'बच्चों का अपहरण?'

–'हाँ महाराज वह भी उन बच्चों का जो कामकाज करके कुछ पैसा कमाकर अपने माँ–बाप की सहायता करना चाहते हैं'– कबीला प्रमुख ने बताया।

–'ठीक है इस रविवार को मैं उस दुष्ट दैत्य को मजा चखाता हूँ। अभी ये मुद्राएं स्वीकार करें और अपने कबीले में बांट दें।'– बलवंत प्रताप ने ढांढस बंधाते हुए कहा।

अपने वायदे के अनुसार राजा बलवंत प्रताप रविवार को अपने सैन्यबल के साथ कबीले में पहुँचा और सावधानीपूर्वक चौकसी करने लगा। यकायक राजा ने देखा, वायुमार्ग से अत्यंत तीव्रगति से दौड़ता हुआ एक दैत्य आया और देखते ही देखते दो बच्चों को उठाकर ले गया। यह सब पलक झपकते ही हुआ कि राजा को संभलने का मौका भी नहीं मिल सका। अतः राजा ने अपने उड़नखटोले से उस दैत्य का पीछा करना प्रारंभ किया।

बलवंत प्रताप ने आसपास देखा पर दैत्य का कहीं पता नहीं था। अन्त में घने बीहड़ के मध्य में एक आश्रम देखकर उसने अपना यान उतारा। राजा को अपने आश्रम में आया देख मुनिश्री ने तत्परतापूर्वक उसका स्वागत किया– 'बताइए राजन आश्रम में पधारने का कष्ट कैसे उठाया?

बलवंत प्रताप बोला– 'मुनिश्री व्यवधान के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। वास्तव में हम एक दैत्य का पीछा करते हुए यहाँ पहुँचे हैं जो नदी पार की बस्ती से कुछ बच्चों का अपहरण करके भागा है... क्या आपने उसे यहाँ से आते–जाते देखा है?

मुनिश्री मुस्कुराते हुए बोले– 'हाँ महाराज, वह दैत्य यहीं है और मैं ही उसे भेजा करता हूँ अपहरण करने के लिए।'

मुनिश्री की निर्भय स्वीकारोक्ति पर राजा की भृकुटी तन गई। 'क्या, आप और अपहरण?'

–'हाँ राजन पिछले दिनों अपहृत किए गए सारे बच्चे यहाँ आश्रम में उपस्थित हैं, चलिए मिलवाता हूँ उनसे'।– मुनिश्री ने बताया।

आश्रम के अंदर पहुँचकर राजा बलवंत प्रताप हतप्रभ रह गया। अनेक बच्चे विभिन्न समूहों में व्यवसायिक प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे थे। कोई खिलौने बनाना सीख रहा था, कोई बढ़ईगिरी, कोई आसन–दरी आदि बनाना सीख रहा था। पास के अहाते में कुछ बच्चों को अक्षर ज्ञान और व्यावहारिक पाठ सिखाए जा रहे थे। राजा को कुछ समझ नहीं आया परन्तु उनका क्रोध शांत हो गया– 'यह क्या मुनिश्री, एक तरफ विद्या देने वाला पवित्र कार्य और दूसरी तरफ अपहरण जैसा जघन्य कार्य... मैं कुछ समझ नहीं पाया।'

मुनिश्री मुस्कुराते हुए बोले– 'महाराज उन्हीं बच्चों का अपहरण किया जाता है जिनके माँ–बाप उन्हें पढ़ने–लिखाने की उम्र में बाल मजदूरी

करने भेज देते हैं। शिक्षा पाने की आयु में मजदूरी कराना जघन्य अपराध है। ...ऐसे बच्चों को यहाँ लाकर हम उन्हें आधे दिन शिक्षा प्रदान करते हैं और आधे दिन किसी व्यवसाय में प्रशिक्षित करते हैं ताकि यहाँ से जाने के उपरांत वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें और माता–पिता का सहारा बन सकें।'

राजा बलवंत प्रताप आश्चर्यचकित रह गये।

मुनिश्री फिर बोले– 'आप चाहे तो इन बच्चों को यहाँ से ले जा सकते हैं मगर कबीले वालों को यह चेतावनी अवश्य दें कि वे इन बच्चों को बाल मजदूर न बनाएं बल्कि विद्याध्ययन कराएं... और हाँ मुझे अपराधी समझते हों तो अवश्य दंड प्रदान करें।'

राजा अभिभूत होकर बोला– 'नहीं मुनिश्री आप यह उत्तम कार्य जारी रखें... मैं कबीले वालों को यहाँ आकर अपने बच्चों से मिलने की व्यवस्था करता हूँ। आपने तो शासन का कार्य बहुत हल्का कर दिया, आप क्यों नहीं सभी बच्चों का अपहरण कर लेते।'

'क्या तात्पर्य राजन?' –मुनिश्री ने आश्चर्य से पूछा।

राजा बलवंत प्रताप हँसते हुए बोला– 'हम पूरे राज्य में मुनादी करवा देते हैं कि पाठशाला जाने की आयु में कोई अपने बच्चों से मजदूरी नहीं कराएगा।

कभी न भूलो

★ प्रभु ज्ञान द्वारा ही निरंकार को जाना जा सकता है।

–बाबा अवतार सिंह जी

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अंत होता है।

★ मानवी गुणों को धारण करने से जीवन सुन्दर बनता है।

– बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

★ जब सत्य (निरंकार) का ज्ञान होता है तब ये बंधन स्वयं ही टूट जाते हैं। – संत निरंकारी मिशन

★ पैसे में ईश्वर को देखना परमेश्वर को भूलने जैसा है।

– लाल बहादुर शास्त्री

★ अच्छा स्वभाव मनुष्य की महान पूंजी है।

– महात्मा गाँधी

★ क्रोध से सब काम नहीं बनते, जैसे शान्ति से बनते हैं।

– भगवद्गीता

★ बुराई के बारे में सोचना, बुराई करने से भी बुरा है।

– मनुस्मृति

★ मानवता की डगर छोड़ने वालों को मानव नहीं कहा जा सकता।

– ऋग्वेद

★ ज्ञान–रूपी कीमती जवाहरात को छिपाकर रखने से उसकी आभा नष्ट हो जाती है। – मुंशी प्रेमचन्द

★ वही सच्चा वीर है जो संसार की माया के बीच में रहकर भी पूर्णता को प्राप्त होता है। – रामकृष्ण परमहंस

संग्रहकर्त्ता : प्रतिक्षा कुशवाहा

प्रेरक–कथा : फेनम सोगानी

ज्ञान की उत्पत्ति

एक युवक किसी सन्त के पास पहुँचा, बोला– महात्मा जी, आप मुझे यह बताएं कि 'ज्ञान की उत्पति' किस तरह होती है?

सन्त ने कहा– इसका उत्तर में सूरज अस्त होने के उपरांत थोड़ा अंधकार होने पर दूँगा, तुम उस समय मेरे पास आ जाना।

युवक अपने घर को लौट आया, सन्त अपनी तपस्या में लीन हो गये।

सन्त के कहे मुताबिक समय पर युवक उनके पास आ पहुँचा।

अब सन्त ने युवक से कहा, "थोड़ी घास लेकर आओ।"

जब वह युवक घास ले आया तो सन्त ने कहा, "इसे दियासलाई से जला दो।"

युवक ने तुरन्त घास में आग लगा दी।

आग लगते ही अंधकार में आस–पास थोड़ी–थोड़ी रोशनी उजाला बनकर फैलने लगी, रोशनी के उजाले में सन्त ने युवक को देखते हुए कहा, "यही है, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर।"

"लेकिन मैं समझा नहीं महात्माजी" युवक ने कहा।

अब सन्त ने कहा– जिस तरह से उजाला अग्नि से उत्पन्न होता है, इसी तरह ज्ञान की उत्पति प्रेम से होती है।

युवक ज्ञान की उत्पति की बात विचित्र ढंग से समझकर बड़ा प्रसन्न था, वह सन्त को प्रणाम कर घर लौट आया।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. भगवान श्रीराम 2. भीम 3. सिक्किम 4. मलयालम
5. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को 6. गौतम ऋषि 7. असम में 8. रोम
9. सर्वनाम 10. वन्देमातरम 11. ओसमियम 12. परशुराम ने
13. झेलम के किनारे 14. हे राम 15. ओम शब्द से।

लेख : मुकेश कुमार बत्तरा

अनमोल रत्न : सबला प्रतापी मैरी कॉम

कभी अबला कही जाने वाली नारी अब सबला है। उसने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी शक्ति, अपनी योग्यता, प्रखरता, अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है और निरंतर कर रही है और जमीन से लेकर आकाश तक अपना प्रभुत्व स्थापित किया है। हिमालय की चोटी को छूने वाली बछेंद्री पाल, आकाश की ऊँचाई को छूने वाली कल्पना चावला, पाँच बार विश्व मुक्केबाजी प्रयोगिता की विजेता मैरी कॉम आदि की कार्य–क्षमता से स्पष्ट है कि नारी अब प्रत्येक दायित्व को संभालने में समर्थ है। वह अब शक्ति की पर्याय बन गई है। वह अब पुरुषों के लिए प्रेरणा बन गई है। इतिहास के पृष्ठों को पढ़कर देश–प्रेम में भी आगे रही है।

मैंगते चंग्नेइजैंग मैरीकॉम (एम.सी. मैरी कॉम) जिन्हें मैरी कॉम के नाम से भी जाना जाता है, एक भारतीय महिला मुक्केबाज है। वे मणिपुर की कॉम जनजाति से हैं। मैरी कॉम पाँच बार विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता की विजेता रह चुकी हैं और वह अकेली ऐसी मुक्केबाज है, जिन्होंने 6 विश्व चैंपियनशिप में कोई–न–कोई मेडल भी जीता है। दो वर्ष के अध्ययन प्रोत्साहन अवकाश के बाद उन्होंने वापसी करके लगातार चौथी बार विश्व गैर–व्यावसायिक बॉक्सिंग में स्वर्ण जीता। उनकी इस उपलब्धि से प्रभावित होकर ए.आई.बी.ए. ने उन्हें मॅग्नीफ़िसेंट मैरी (प्रतापी मैरी) का संबोधन दिया। उनकी वर्तमान विश्व रैंकिग 4 है। वह 2012 के लंदन ओलंपिक में महिला मुक्केबाजी में भारत की तरफ से जाने वाली एकमात्र महिला हैं। उन्होंने 51 किलोग्राम (फ्लाईवेट) मुकाबले में कांस्य पदक जीता है।

प्रारंभिक जीवन और परिवार

मैरी कॉम का जन्म 1 मार्च 1983 को मणिपुर के चुराचांदपुर जिले के कांगाथेई गाँव में एक गरीब किसान के परिवार में हुआ था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा लोकटक क्रिश्चियन मॉडल स्कूल और

सेंट जेवियर स्कूल से पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिए वह आदिमजाति हाई स्कूल, इंफाल गईं लेकिन परीक्षा में सफल न होने के बाद उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और फिर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय से परीक्षा दी।

उनके माता–पिता मैंगटे टोन्पा कॉम और मैंगटे अखाम कॉम झूम खेतों में काम करते थे। मैरी कॉम की रूचि बचपन से ही एथलेटिक्स में थी। उनके मन में बॉक्सिंग का आकर्षण 1999 में उस समय उत्पन्न हुआ जब उन्होंने खुमान लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में कुछ लड़कियों को बॉक्सिंग रिंग में लड़कों के साथ बॉक्सिंग दाँच–पेंच आजमाते देखा। मैरी कॉम बताती हैं कि "वह नजारा देखकर वे स्तब्ध थीं। उन्हें लगा कि जब वे लड़कियाँ बॉक्सिंग कर सकती हैं तो वे क्यों नहीं कर सकती?" साथ ही मणिपुरी बॉक्सर डिंगो सिंह की सफलता ने भी उन्हें सन् 2000 में बॉक्सर बनने के लिए प्रेरित किया।

उपलब्धियाँ एवं पुरस्कार

मैरी कॉम ने आरंभ में बॉक्सिंग में अपनी रुचि को अपने परिवार से छुपाने की कोशिश की, क्योंकि लड़कियों के लिए इसे उचित खेल नहीं माना जाता था, परन्तु वर्ष 2000 में, मणिपुर में राज्य स्तर पर बॉक्सिंग चैंपियनशिप जीतने पर, यह सार्वजनिक हो गया। उनके पिता को तो उनकी उपलब्धि के बारे में, अखबार में छपे उनके फोटो से ज्ञात हुआ। पश्चिम बंगाल में क्षेत्रीय चैंपियनशिप जीतने के बाद उन्होंने केवल 18 वर्ष की आयु में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिताओं में भाग लेना शुरू कर दिया, जबकि उन्हें बॉक्सिंग शुरू किए हुए एक वर्ष ही हुआ था। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने सबसे पहले प्रथम ए.आई.बी.ए. विश्व महिला मुक्केबाजी चैंपियनशिप जो यू.एस. में हुई, उसमें भाग लिया और 48 कि.ग्रा. वजन में रजत जीता। इसके बाद उन्होंने 2002 में टर्की में आयोजित द्वितीय ए.आई.बी.ए. चैंपियनशिप में 45 कि.ग्रा. में स्वर्ण पदक जीता।

2003 में मैरी कॉम ने 46 कि.ग्रा. वजन वर्ग में एशियन महिला मुक्केबाजी में स्वर्ण पदक जीता और इसी वर्ष उन्हें खेल में विशिष्ट उपलब्धियों के लिए अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2004

में नॉर्वे में महिला बॉक्सिंग विश्वकप में स्वर्ण जीता और 2005 में दोबारा एशियन चैंपियनशिप (ताइवान में) और ए.आई.बी.ए. विश्व चैंपियनशिप (रूस में) स्वर्ण पदक हासिल किया। अगले वर्ष उन्होंने वीनस महिला बॉक्स कप (डेनमार्क में) और भारत में ए.आई.बी.ए. विश्व चैंपियनशिप में भी स्वर्ण पदक जीता।

वर्ष 2010 में मैरी कॉम ने कजाकिस्तान में एशियन चैंपियनशिप में स्वर्ण और बारबाडोस में ए.आई.बी.ए. में लगतार पाँचवाँ स्वर्ण पदक हासिल किया। ए.आई.बी.ए. ने 46 कि.ग्रा. वजन गर्ग की प्रतियोगिता को बंद कर दिया तो उन्होंने बारबाडोस में 48 कि.ग्रा. की प्रतियोगिता में भाग लिया। 2010 के एशियाई खेलों में उन्होंने 51 कि.ग्रा. वजन वर्ग (जो सबसे कम था) में हिस्सा लिया और कांस्य पद जीता।

वर्ष 2011 में 48 कि.ग्रा. वर्ग वजन में चीन में एशियाई महिला कप में स्वर्ण पदक जीता और 2012 में मंगोलिया में 51 कि.ग्रा. वर्ग में एशियाई महिला चैंपियनशिप में भी स्वर्ण पदक जीता है।

3 अक्तूबर 2010 में दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेलों के प्रारंभ समारोह में मैरी कॉम को विजेन्द्र सिंह के साथ क्वींस बैटन को लेने का गौरव प्राप्त हुआ लेकिन महिला मुक्केबाजी की स्पर्धा राष्ट्रमंडल खेलों में शामिल न होने के कारण, वे वहाँ नहीं खेल सकीं। ओलम्पिक गेम्स में पाँच बार विश्व चैंपियन रह चुकी मैरी कॉम ने 46 और 48 कि.ग्रा. वर्ग में कई मेडल जीते हैं।

उन्हें वर्ष 2006 में उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। 26 जुलाई, 2009 को वे भारत के सर्वोच्च खेल सम्मान ''राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार'' के लिए (मुक्केबाज विजेंदर कुमार तथा पहलवान सुशील कुमार के साथ) चुनी गईं।

भारतीय खेल जगत में 'मैरी कॉम' यह नाम अब परिचय का मोहताज नहीं है। यह मणिपुरी बाला देश का गौरव है। वे मुक्केबाजी में एक स्वप्नबल मुकाम हासिल कर चुकी है। पाँच बार की विश्व चैंपियन मैरी कॉम अब एशियाई खेलों में पदक जीतने के लिए बेकरार है।

पढ़ो और हँसो

अंतरिक्ष का एक विज्ञानी लम्बी दूरी तक देख सकने वाली अपनी दूरबीन की सहायता से सितारों को देख रहा था।

इस दौरान साइंस लेबोरेटरी के चौकीदार ने आकाश पर एक तारा टूटता देखा तो वैज्ञानिक की तरफ देख कर बोला – मान गए सर, क्या शानदार निशाना लगाया है।

राम : (श्याम से) मेरा घोड़ा सूखी घास नहीं खाता है और आजकल हरी घास मिलती नहीं।

श्याम : मेरा घोड़ा भी सूखी घास नहीं खाता था, मगर अब खाने लगा है।

राम : वह कैसे?

श्याम : क्योंकि मैंने उसे हरे रंग का चश्मा पहना दिया है।

एक क्लर्क अपने अफसर से मिलने के लिए उनके घर पहुँचा तो नौकर ने बताया कि साहब सो रहे हैं।

क्लर्क नौकर से बोला – अच्छा तो क्या वे घर में भी सोते हैं।

एक दार्शनिक महोदय डॉक्टर के पास पहुँचे। उसके दोनों कान बुरी तरह जले हुए थे।

डॉक्टर ने पूछा – कान कैसे जला?

दार्शनिक बोला – जी मैं कपड़े प्रेस कर रहा था तभी टेलिफोन की घंटी बजी और मैंने आयरन को टेलिफोन समझकर कान पर लगा लिया था। इससे एक कान जल गया।

डॉक्टर ने फिर पूछा – और दूसरा कान?

दार्शनिक का जवाब था– दोबारा फोन आ गया था।

डॉक्टर ने मरीज के कान का आपरेशन करने के बाद कहा– बधाई हो, आपके कान का ऑपरेशन सफल रहा।

मरीज बोला – क्या कहा? मुझे तो कुछ सुनाई ही नहीं दे रहा।

– मनीष कुमार (बैरागढ़)

संता ने सोये हुए शेर को लात मार कर जगाया और बंता से बोला– बंता भाग।
बंता बोला – मैं क्यों भागूं लात मैंने थोड़े ही मारी है।

मम्मी : (विजय से) तुम्हारी टीचर तो कह रही थी कि तुम काफी तेज लड़के हो और सारी क्लास में सबसे आगे रहते हो तो फिर तुम्हारे इतने कम नम्बर क्यों आए?
विजय : मम्मी जी! आपको टीचर की बात पूरी तरह समझ नहीं आई। वे तो मेरे दौड़ने के बारे में कह रही थी।

डॉक्टर : (राजन से) चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम दिल खोल कर हँसा करो।
राजन : डॉक्टर साहब! लोगों को मुंह खोलकर हँसते हुए तो देखा है किसी को दिल खोल कर हँसते नहीं देखा।

एक बहुत ही मोटा आदमी घूमने निकला था। रास्तें में उसे फुटपाथ पर वजन बताने वाली मशीन दिख गई। उस पर लिखा था – मैं आपका वजन बता सकती हूँ।

आदमी उस मशीन में सिक्का डालकर उस पर चढ़ गया। तभी मशीन बोल उठी – साहिबान! एक–एक करके चढ़िए। इस तरह एक साथ नहीं।

साजन :मुझे अपने ड्राईवर को हटाना पड़ेगा। कम्बख्त ने चार बार मेरी जान लेने की कोशिश की है।
साजन :उसे एक मौका और दे दीजिए।

मालिक : (नौकर से) तुझे कितनी बार कहा है कि उस दुकानदार से राशन न लाया कर। वह सौदा तोलते समय आंखों में धूल डाल देता है।
नौकर : जी, मैं उस समय आंखें बंद कर लेता हूँ।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

मार्च अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम : मनीषा — आयु 12 वर्ष
7/5 निरंकारी कालोनी
दिल्ली – 110009

द्वितीय : कीर्ति — आयु 12 वर्ष
119 ई मॉडल टाउन
हिसार (हरियाणा)

तृतीय : सुहावनी — आयु 9 वर्ष
फ्लैट नं. 74, श्री हरि अपार्टमेंटस
प्लाट नं. – 6, सेक्टर–12
द्वारका, दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

अनन्त शाक्य (महावीर नगर, भरथना), गुरमीत कौर (हरि नगर, दिल्ली), करुणा (ज्योति पार्क, गुड़गांव), तांजिल जिंदल (प्रीत कालोनी, सुनाम), अनिता (टोड़ा, पंचकूला), पल्लवी (खगोल), ऋद्धिमा (जनता कालोनी, रामपुराफूल), दीक्षा कुमारी (देहरा), जगरूप सिंह पाल (अधोया), हरमीत सिंह (रामनगर, करनाल), अक्षय कुमार (सै–46, बी. चण्डीगढ़), संतोष (सै.–11, पंचकूला), अंशुमान (रतिया), अनिशा (फाफाडीह, रायपुर), सुकीर्ति (विशाल नगर, रायपुर), प्रिया कक्कड़ (लारेंस रोड, अमृतसर)

मई अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 मई** तक सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के जुलाई अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका भारत के लिए वार्षिक शुल्क 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/– रुपये, दस वर्ष के लिए 600/– रुपये एवं 20 वर्ष के लिए सदस्यता शुल्क 1000/– रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ एक पर देखें। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेट बैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कहानी : जितेन्द्र मिश्र जीतू

हमें माफ कर दो

नदी किनारे एक आम का बाग था। जिसमें हर वर्ष आमों की अच्छी फसल हुआ करती थी। उसी बाग में उन पेड़ों के बीच एक नीम का पेड़ भी था, जो अपनी प्रजाति में बिल्कुल अकेला था। इसी कारण सारे पेड़ उसे ईर्ष्यावश उपेक्षा की नजरों से देखा करते व अपने फलों पर गर्व कर उस पर तीखी टिप्पणियां किया करते। जिस कारण नीम को बहुत दुःख पहुँचता। लेकिन फिर भी एक अच्छे पड़ोसी की तरह ही वह सभी से शालीनता का व्यवहार करता था। इस पर सभी पेड़ डरपोक समझकर उसका उपहास करते थे। इससे उसके कोमल हृदय को काफी दुःख होता था।

इस बार भी आम की फसल अच्छी हुई थी। सभी वृक्ष खुशी से झूम रहे थे। अचानक दशहरी के मन में क्या आया? कि तुरंत नीम की तरफ इशारा कर बोला– हम लोगों की खुशी के बीच यह बेचारा दुःखी क्यों है?

चौसा बोला– अरे भई, सीधा सा मतलब है, इसे हम लोगों की खुशी देखी नहीं जाती, शायद इसलिए।

इस बार लंगड़े ने नीम को चिढ़ाते हुए कहा– वैसे जो किसी के सुख–दुःख में सम्मिलित न हो वह किसी के काम का रहा ही कहाँ? फिर तुम तो ठहरे कड़वी जुबान के, किसी के काम भला क्या आते होंगे?

–भाईयों ऐसी बात नहीं है, मैं तो सदा से आप लोगों का सच्चा हितैषी रहा हूँ, यह आप लोग मानें या न मानें और रही बात कड़वेपन की तो वह भी मैं आप लोगों को बता दूँ कि मेरा स्वाद भले ही कड़वा क्यों न हो लेकिन मेरी शालीनता व विनम्र व्यवहार में तो मधुरता है। हाँ एक बात और! मैं आपकी जानकारी के लिए बता देना चाहता हूँ कि मैं आप लोगों की तुलना में कितने गुना अधिक काम में आने वाला हूँ।

सभी वृक्ष टकटकी नजर से ध्यान–मग्न हो नीम की बातें सुन रहे थे।

आप लोगों के अत्यधिक सेवन से जो फोड़े–फंसियां व चर्मरोग होते हैं, उन पर मेरी ऊपर की छाल घिसकर लगाने से काफी हद तक आराम मिलता है। खाद्यान्न जैसे– गेहूं में कीड़ों से बचाव के लिए लोग मेरी पत्तियां डाल देते हैं जिससे कीड़े नहीं पड़ते। इसी प्रकार मच्छर आदि कीटों से सुरक्षा के लिए मेरी सुखी पत्तियों का धुआं काफी

लाभदायक है। आंखें आ जाने पर, उनकी सुरक्षा के लिए मेरे फलों (निबौरी) को आंखों में लगाने से ठीक हो जाती है। मेरी छोटी–छोटी टहनियों से तैयार दातून करने से मुंह से आने वाली दुर्गंध खत्म हो जाती है, व दाँतों में कभी कीड़ा नहीं लगता और न जाने कितने ही चिकित्सीय उपयोगों में मैं काम करता हूँ।

अब आप लोग ही निर्णय करो कि किस मामले में मैं आपसे पीछे हूँ? नीम ने अपनी सारी उपयोगिता बताकर पूछा। सभी वृक्षों का सिर शर्म से झुक गया।

सभी एक स्वर में बोले– हमें माफ कर दो। हमने तुम्हें सदैव तुच्छ समझकर तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया। तुमको अपनी उपयोगिता मालूम होते हुए भी घमण्ड छू तक नहीं गया। जबकि हम लोग सिर्फ अपने फलों की उपलब्धियों पर ही अहं में डूबे रहे। आज तुमने यह सिद्ध कर दिया कि दिखावे से कोई महान नहीं बनता, कार्यों से महान बना करता है। हमें माफ कर दो। हम वायदा करते हैं कि आज के बाद हम सभी से अच्छा व्यवहार करेंगे व किसी भी छोटे या बड़े की खिल्ली नहीं उड़ायेंगे।

–आप सभी अपनी गलती मान चुक हैं फिर माफी किस बात की।– नीम ने सभी पेड़ों को समझाकर कहा। सभी वृक्ष नीम की भूरि–भूरि प्रशंसा करने लगे।

किट्टी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
www.printmirchi.com
अरे तुम्हें पता है अपनी किट्टी बहुत होशियार और बहादुर है।
एक बार किट्टी घर में बिलकुल अकेली थी।
किट्टी की सहेली मीना, उसके घर आयी और वे खेलने लगीं।
अचानक दो चोर खिड़की से घर में घुस आए।

चाकू दिखाकर उन्होंने दोनों को डराने की कोशिश की।
चोरों ने दोनो को तिजोरी दिखाने को कहा।
किट्टी एक निडर लड़की थी और वह बिल्कुल नहीं डरी।
किट्टी ने चतुरई से एक कमरे की तरफ इशारा कर दिया।
चोरों के अंदर जाते ही किट्टी ने दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया।

दूसरी तरफ मीना डर के कारण कमरे के किसी कोने में छुप गयी थी।
किट्टी ने तुरंत अपने पिताजी और पुलिस को फोन करके बुला लिया।
पुलिस आई और उन्होने चोरों को पकड़ लिया।

पुलिस ने छोटी सी किट्टी की बहादुरी की प्रशंसा की।
किट्टी के माता पिता ने गर्व महसूस किया
स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर किट्टी को उसकी होशियारी और बहादुरी के लिए पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
अरे सच में अपनी किट्टी बहुत बहादुर है। हमें भी किट्टी की तरह बनना चहिए।

फोटो फीचर

देखो देखो मेरा यह खिलौना कितना अच्छा है।
– आश्रित (विशाल कुंज, दिल्ली)

मेरे पास समय नहीं है, मैं अभी फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लेने जा रहा हूँ।
– सोयान (मजलिस पार्क, दिल्ली)

देखो मैं अब यह जादुई बटन दबा कर तुम्हें क्या दिखाता हूँ।
– पुनीत (उड़ापड़, नवांशहर)

अरे, अरे! दूसरा बटन दबाओ, थोड़ा इस तरफ वाला।
– हार्दिक (कोल्हापुर)

मैं तो अपनी स्टेयरिंग से ही गति पर पूरा नियंत्रण रखता हूँ।
– अश्विन अरोड़ा

मैं अब बड़ा हो गया हूँ। मुझे खेल–कूद से ज्यादा अपनी पढ़ाई का ध्यान रखना है।
– आदित्य शर्मा (सरदार शहर)

बाल कविता : हरजीत निषाद

सूरज सुबह निकलता है

सूरज सुबह निकलता है।
दिन भर चलता रहता है।
धूप रोशनी देता सबको,
शाम हुई तो ढलता है।

फसल धूप से पकती है।
रोग बीमारी टलती है।
सर्दी में अच्छी लगती,
धूप जून में तपती है।

धूप विटामिन डी देती।
रोग त्वचा के हर लेती।
सागर का पानी लेकर,
बादल वर्षा जल देती।

पर्यावरण बचाएं हम।
धूप से न घबराएं हम।
कुदरत का वरदान है ये,
इससे बिजली उपजाएं हम।

कहानी : ममता विरदी

हृदय परिवर्तन

शिवगढ़ के राजा शिव सिंह बड़े परोपकारी एवं दयालु स्वभाव के थे। वे प्रजा की हर सुख–सुविधाओं का ख्याल रखते थे। इसी कारण उनके राज्य में प्रजा खुशहाल और सम्पन्न थी। शिवगढ़ के पड़ोसी राज्य बहादुरगढ़ के राजा बहादुर सिंह थे। उसका राज्य उतना खुशहाल नहीं था, जितना कि शिवगढ़ राज्य खुशहाल एवं सम्पन्न था।

राजा बहादुर सिंह शिवगढ़ की सम्पन्नता से बहुत चिढ़ते थे। उनके मन में शिवगढ़ के प्रति ईर्ष्या थी। उन्होंने सोचा क्यों न शिवगढ़ पर चढ़ाई करके उस पर कब्जा जमा लिया जाए। उसने अपने विचार से सेनापति को अवगत कराया। सेनापति भी राजा के विचार से सहमत हुआ।। अन्ततः राजा बहादुर सिंह ने शिवगढ़ पर चढ़ाई कर दी। राजा शिव सिंह ने सोचा अगर वह तलवार का जवाब तलवार से देता है तो अकारण ही अनेक लोग मारे जाएंगे। अतः वह तलवार का जवाब तलवार से देने की बजाय जनता की भलाई के लिए चुपचाप महल से पलायन कर गये।

राजा बहादुर सिंह का बिना युद्ध लड़े शिवगढ़ पर अधिकार हो गया। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि इतनी सुगमता से शिवगढ़ पर अधिकार हो जाएगा। राजा बहादुर सिंह ने घोषणा करवा दी कि जो व्यक्ति उस भगोड़े राजा शिव सिंह को दरबार में हाज़िर करेगा उसे मुंह–मांगा ईनाम दिया जाएगा।

शिवगढ़ में ही दो भाई मंगल और अमंगल रहते थे। वे दोनों जंगल में लकड़ी काटते और फिर उसे बेचकर अपना व परिवार का भरण–पोषण

करते थे। मंगल संतोषी स्वभाव का था व अमंगल असंतोषी। जब उसने सुना कि शिव सिंह को पकड़ने वाले को एक लाख मोहरें इनाम में दी जाएंगी तो उसके मुंह में पानी आ गया। उसने बडे भाई से कहा– अगर वे राजा को पकड़ लें तो उन्हें एक लाख मोहरें इनाम में मिलेगी फिर हम सारी उम्र आराम से बिताएंगे।

मंगल ने कहा– अमंगल तू मूर्ख है। तुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए।

मंगल लकड़ी काटने लगा और अमंगल बैठकर सोचने लगा– अगर एक लाख मोहरें मिल जाएं तो मेरी तो तकदीर खुल जाएगी।

मंगल ने कहा– ऐसे परोपकारी राजा के बारे में ऐसा सोचना बुरी बात है। देखा नहीं प्रजा का व्यर्थ खून न बहे इसलिए उन्होंने प्रजा के हित के लिए खुद अपना राज–पाट और सुख–सुविधाएं त्याग दीं। न

जाने आज वह कहाँ और किस हाल में होंगे?

–भैया तुम्हारी उम्र तो लकड़ी काटने में ही खत्म हो जाएगी, बड़ी मुश्किल से अवसर मिला है, मैं तो मालामाल हो जाऊँगा।

इसी बीच राजा शिव सिंह प्रकट हुए। वह काफी देर से छुपकर उनकी बातें सुन रहे थे।

राजा ने कहा– अमंगल। मेरे पकड़वाने से अगर तेरी गरीबी दूर हो जाए तो मैं प्रस्तुत हूँ। एक न एक दिन इस नश्वर शरीर को त्यागना ही है। क्यों न मेरे शरीर के बदले तुम्हें गरीबी से मुक्ति मिल जाए। चलो ले चलो मुझे राजा बहादुर सिंह के पास।

अमंगल खुशी से झूम उठा। उसी वक्त वहाँ चार आदमी आ पहुँचे। उन्होंने मंगल और अमंगल को वहाँ से भगा दिया और राजा को पकड़

कर दरबार की ओर चल पड़े। वे राजा को लेकर राजा बहादुर सिंह के सामने प्रकट हुए। मंगल भी दुःखी मन से दरबार में पहुँच गया।

राजा बहादुर सिंह बहुत खुश हुए और पूछा– किसने शिव सिंह को पकड़वाया है?

इस बात को लेकर उन चारों में विवाद हो गया। अन्ततः राजा बहादुर सिंह ने शिव सिंह से पूछा तो राजा शिव सिंह ने जवाब दिया कि मुझे इस लकड़हारे मंगल ने पकड़वाया है।

यह सुनते ही मंगल फूट–फूटकर रोने लगा और राजा बहादुर सिंह को सारी बात बता दी।

मंगल की बात सुनकर राजा बहादुर सिंह चौक गये। राजा बहादुर सिंह ने मंगल को राज्यकोष से एक लाख मोहरें देने की घोषणा की।

तत्पश्चात् वह राजगद्दी से नीचे उतरे और राजा शिव सिंह के पास पहुँचे और बोले– राजन्! आप महान हैं। आपके दिल में हमेशा परोपकार की भावना रहती है। आज भी परोपकार के लिए आपने अपने प्राणों को खतरे में डाल दिया। आपकी महानता और त्याग ने मेरी आँखें खोल दी। मैं अब आपको मित्र बनाना चाहता हूँ, इसलिए अब मैं आपका राज्य वापिस करता हूँ।

राजा शिव सिंह ने राजा बहादुर सिंह को गले लगाते हुए कहा– शत्रु को नहीं शत्रुता को खत्म करना चाहिए क्योंकि शत्रुता ही समस्त बुराईयों की जड़ है।

कचनार

हरी डाल पर
सफेद है रंग
कमल जैसा
खिलने का ढंग।

पंखुड़ी का रंग
बहुत निराला
अन्य रंग है
बैंगन वाला।

भारत का यह
पौध है मूल
सुंदर दिखता
खिले जब फूल।

लोक गीतों में
मिल जाय नाम
औषध में भी
आय यह काम।

गुलदाउदी

महक अनोखी
रंग अनोखा
जहां रहे यह
दिखता चोखा।

सौ तरह का
यह है होता
बड़ा फूल भी
इसमें होता।

गमला में है
ज्यादा शोभे
देखे उसके
मन को लोभे।

बीज नहीं पर
बहुत है फूल
गरमी में यह
हो जाए गूल।

—चाँद मोहम्मद घोसी

खेल का समय

आपके पत्र मिले

हँसती दुनिया प्रकाशित 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' हमारे जनरल नॉलेज के ज्ञान को बढ़ाती है। इस पत्रिका से हमें नये–नये जीव–जन्तुओं के बारे में भी रोचक जानकारी मिलती है।

– सन्नी कुमार (वैशाली)

धोने हाथ जरूरी

चाहे खाओ रोटी बच्चो,
चाहे हलवा पूरी।
खाने से पहले हैं धोने
दोनों हाथ जरूरी।

मम्मी पापा तुमसे चाहें,
कोई फल कटवाएं।
सत्संग में भी सन्त कोई,
तुमसे लंगर बटवायें।
खानी हो खिचड़ी या दलिया
या खानी हो पूरी।
खाने से पहले हैं धोने
दोनों हाथ जरूरी।

ऐसा करने से रहोगे,
आप सदैव निरोग।
कहते इस अनमोल कथन को
सारे डॉक्टर लोग।
सभी साथियों में बच्चों तुम,
कर दो खूब मशहूरी।
खाने से पहले हैं धोने
दोनों हाथ जरूरी।

– इन्द्र मल्होत्रा (पानीपत)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ, मुझे हँसती दुनिया पढ़ने में बहुत अच्छी लगती है। इसमें 'भैया से पूछो' एवं चित्रकथा 'दादा जी' और 'पढ़ो और हँसो' मेरी सबसे पंसदनीय हैं। मेरा पूरा परिवार इसे पसंद करता है। इसकी एक–एक कहानी हमारा परिवार पढ़ता है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हँसती दुनिया का प्रचार सारी दुनिया में हो।

–रवि कुमार मल्होत्रा (खुर्द–खेड़ा)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 क	र	2 नी		3 ल	ता
म		4 र	ब	ड़	
5 ला	6 ओ	स		7 क	र्ण
	टा		8 सौ	प	
9 ह	वा	10 ना		11 न	12 दी
ल		13 खू	न		प
14 वा	म	न		15 ए	क

TU HI NIRANKAR

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SUPER AQUA®
R.O. System

WHITE GOLD®
AQUA FRESH
Reverse Osmosis
AN ISO 9001:2000 Certified Company.

Wholesale & Retailer of all type of **Water Purifier, Water Dispenser, R.O. System & Commercial R.O System 100 to 500 Ltr.**

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

FREE DEMO
WATER TESTING

आसान किश्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

for enquiry call Customer Care
09650573131
(Arvind Shukla)

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

SATGURU HOME APPLIANCES
(Call. 09910103767)

Head office. E-1/23, Ground Floor Sec-16, Rohini Nr. Jain Bharti Public School, Delhi-110085

Mumbai office. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex Nr. T.V Tower, Badlapur (East) Thane, Maharashtra.

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा, दूषित एवं खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस कार्टरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

MUBAI : Vorivali, Kurla, Dadar, Thane, Ulhas Nagar, Kalyan, Badlapur **MAHARASHTRA** : Pune, Aurangabad, Versa, Nagpur, Buland, Kohlapur **SOUTH INDIA** : Hyderabad, Belgaum **UTTAR PRADESH** : Allahabad, Gorakhpur, Mathura, Agra, Kanpur, Jonpur, Lucknow, Azamgarh **UTTRAKHAND** : Dheradun, Haldwani, Rishikesh, Haridwar **PUNJAB** : Chandigarh, Hoshiarpur, Bhatinda, Patiala, Jalandhar, Ludhiana **BIHAR** : Patna, Samastipur, Darbhanga, Gaya, Bhagalpur **WEST BENGAL** : Kolkata, Sealdah **RAJASTHAN** : Jaipur, Jodhpur

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec II
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)